**International Journal of Hindi Research**
**ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22**
**Received: 12-10-2020; Accepted: 27-10-2020; Published: 15-11-2020**
**www.hindijournal.com**
**Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 27-30**

# मणि मधुकर के रिपोर्ताजों में निहित राजस्थान के अकाल का अध्ययन

**ऋषिकेश सिंह**
शोधार्थी, हिंदी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली, भारत

**प्रस्तावना**

मणि मधुकर एक बहुआयामी साहित्यकार हैं। उन्होंने उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक, एकांकी, रिपोर्ताज आदि कई साहित्यिक विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है। राजस्थान के चुरु जिले में जन्मे इस सृजनकार को उसके साहित्यिक अवदान के लिए साहित्य अकादमी जैसे पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में इनके अकाल संबंधी रिपोर्ताजों का अध्ययन किया जाएगा। वस्तुत: रिपोर्ताज आँखों देखी घटना का साहित्यिक प्रस्तुतिकरण होता है, अधिकतर यह रिपोर्टिंग आपदाओं और विभिषिकाओं से संबंधित होती है। "रामचन्द्र तिवारी" के शब्दों में कहें तो "रिपोर्ताज मुख्यत: किसी रोमांचक, आतंककारी, या विभीषक घटना युद्ध, अकाल, बाढ, सूखा आदि पर आधृत होते हैं।"[१] इस रूप में अकाल जैसी विभीषिका रिपोर्ताज साहित्य का प्रमुख हिस्सा बन जाती है, और इसी कारण मणि मधुकर द्वारा राजस्थान के अकाल पर कठिन परिश्रम व सूक्ष्म संवेदनागत दृष्टि से लिखे गए मार्मिक रिपोर्ताज महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

मणि मधुकर के रिपोर्ताजों में राजस्थान के अकाल के फलस्वरूप जनजीवन की स्थिति को बडी ही मार्मिकता के साथ चित्रित किया गया है। किंतु किसी भी संवेदनागत पहलू के निर्माण में परिस्थितिजन्य कारकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। अकाल के संदर्भ में तो यह और भी आवश्यक हो जाता है कि उसके प्रभाव से बनी संवेदनात्मक स्थिति के लिए जिम्मेदार कारकों की खोज के बाद ही उसकी मार्मिकता की तीव्रता को समझा जा सकता है। अत: प्रस्तुत प्रपत्र में सर्वप्रथम राजस्थान के अकाल के कारकों की चर्चा के उपरांत ही उसके संवेदनागत प्रभावों का विश्लेषण किया जाएगा। चूंकि प्रकृति निर्मित अकाल का गहरा संबंध भौगोलिक एवं जलवायवीय दशाओं से होता है तथा साथ ही उसका सर्वाधिक दुष्प्रभाव उस क्षेत्र की आर्थिक दशा पर पड्ता है जिससे गरीबी, भुखमरी, पलायन, शोषण, तथा अनेक अमानवीय कृत्यों का जन्म होता है, इसलिए एक क्षेत्र के तौर पर राजस्थान में उपरोक्त तत्वों को कारकों के रूप में अन्वेषित करने का प्रयास सर्वप्रथम किया जाएगा।

राजस्थान भारत का सबसे बडा राज्य है (३४२२३९ वर्ग कि.मी.)। राज्य का पश्चिमी भाग देश के सबसे बडे रेगिस्तान 'थार' का हिस्सा है, वहीं ज्यादातर पूर्वी भाग अरावली पर्वत श्रेणी के अंतर्गत आता है। थार के भाग में वर्षा का औसत १२-३० से.मी. है जबकि पूरे राजस्थान में वर्षा का कुल औसत ६०-८० से.मी. है जिसे ज्यादा अच्छा नहीं कहा जा सकता है, कृषि की दृष्टि से तो बिल्कुल नहीं। 'राज्यसभा टेलीविजन' द्वारा कराए गए सर्वे की रिपोर्ट 'प्यासी धरती प्यासे लोग' में यह कह गया कि "अकाल की मार उन १२ शुष्क मरूस्थलीय जिलों पर ज्यादा है जिसके दायरे में राजस्थान का ६२ फीसदी भूभाग आता है....यहाँ साल भर जितना पानी बरसता है वह देश के कई हिस्सों में एक दिन में बरस जाता है"।[२] इस प्रकार समुद्र से दूरी, मरूस्थलीय एवं पहाडी भागों के मध्य अवस्थिति, उच्च तापमान, न्यून वर्षा, तीव्र हवाओं के साथ-साथ राजस्थान की शुष्क जलवायु उसे भारत के सबसे प्रमुख अकाल प्रभावित राज्य बनाती है।

अकाल राजस्थान की आवृत्तिमूलक समस्या है। इस तथ्य की पुष्टि 'राजस्थान सरकार' के 'आपदा प्रबंधन एवं सहायता विभाग' की रिपोर्ट "फ्रिक्वेंसी ऑफ ड्राट" से की जा सकती है, इस रिपोर्ट के मुताबिक राजस्थान को ५ आवृत्तिपरक वर्षों में विभाजित किया है। पहले वर्ग में प्रत्येक तीन वर्ष पर सूखे से प्रभावित होने वाले जिले- बाडमेर, जैसलमेर, जालोर, जोधपुर, सिरोही, दूसरे वर्ग में प्रत्येक चार वर्ष पर सूखे से प्रभावित जिले- अजमेर, बीकानेर, सहित आठ जिले, तीसरे वर्ग में प्रत्येक पाँच वर्ष पर इसमें अलवर, जयपुर सहित ग्यारह जिले, चौथे वर्ग में प्रत्येक छ: वर्ष पर जिसमें कोटा, उदयपुर समेत सात जिले वहीं पाँचवें वर्ग में प्रत्येक आठ वर्ष पर जिसमें भरतपुर और धौलपुर जिले शामिल हैं। इस प्रकार ध्यान से देखा जाय तो कुल ३३ जिले अकाल की आवृत्तिपरक समस्या के अंतर्गत आते हैं।

अकाल का इस राज्य के आर्थिक दशा पर भी विपरीत प्रभाव

पडा है क्योंकि एक तरफ जहाँ यह राज्य औसत जनसंख्या के साथ कुल सकल घरेलू उत्पाद में देश में नौवां स्थान (१२४१९९ अरब रूपया) रखता है वहीं दूसरी तरफ एन.एस.एस.ओ. के गरीबी सूचकांक में १३वें स्थान पर (गरीबी का स्तर १४%) तथा विश्व बैंक द्वारा जारी "मानव विकास सूचकांक" में इस राज्य का सूचकांक ०.४३४ है जिसे श्रेणी में निम्न कहा गया है। ये आंकडे अन्य राज्यों की तुलना में राजस्थान के लिए विरोधाभासी हैं क्योंकि जिस राज्य में प्रति व्यक्ति भौगोलिक सम्पदा/क्षेत्र जितना अधिक है वहाँ प्रति व्यक्ति संसाधन उपलब्धता उतनी ही अधिक है।

अकाल एक वंचनापरक समस्या है, जिसका संबंध खाद्य आपूर्ति, भोजन की खपत, और मृत्यु दर से होता है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री 'अमर्त्य सेन' के शब्दों में कहें तो "अकाल में भुखमरी आवश्यक है पर प्रत्येक भुखमरी जैसी अवस्था अकाल नहीं होती है....यहाँ भुखमरी का सीधा अर्थ लोगों को पूर आहार नहीं मिल पाना है। अकाल इसी भुखमरी की दशा का वह भयावह रूप है जहाँ लोगों की बडे पैमाने पर मृत्यु होने लगती है"[३] कुछ ऐसा ही मानना 'जार्जटाउन विश्वविद्यालय' के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो. रैवेलिन का भी है कि "अकाल किसी आबादी के कुछ खंडों में भोजन ग्रहण न करने पर असामान्य रूप से गंभीर खतरे के साथ असामान्य रूप से उच्च मृत्युदर"।[४] राजस्थान के संदर्भ में उपरोक्त स्थिति का इतिहास काफी पुराना है। 'अरविंद कुमार के राज्यसभा रिपोर्ट 'प्यासी धरती प्यासे लोग' में कहा गया है "इतिहास के तमाम अकाल यहाँ के दस्तावेज में दर्ज हैं कभी गाँव उजड गए तो कभी लोगों के भूखे मरने की नौबत आई लोगों को याद है सन १९५६ का भयावह अकाल, उस समय भूख से करीब १० लाख लोग मरे। जानवरों के मौत की तो गिनती तक नहीं।"५ लोकगीतों में उस अकाल को याद करते हुए आज भी लोग गाते हैं "छपन्या रे काल फेर मत आजे म्हारी दुनिया में" किन्तु पुन: इसकी भीषण आवृत्ति १९५७, १९६५-६६, १९८०, १९८५-८८, २००२ आदि वर्षों में हुई है। वर्तमान दौर में इसकी बडी ही सटीक रिपोर्टिंग 'डी.के.पुरोहित' ने 'वर्ल्ड स्ट्रीट' के रिपोर्ट 'राजस्थान में भीषण अकाल, किसान बर्बाद और बदहाल में की है "राजस्थान अकाल की चपेट में है, किसान बदहाल है, पशुपालकों ने पलायन शुरु कर दिया है। इस साल औसत से ६५% कम बरसात हुई है। मंत्री और नेता बातें कर रहे हैं। किसानों से साहूकारों से कर्जा लेकर अच्छे दिन की आस लगाई मगर बादल रूठे हैं और एक बार फिर सूखा कंठ के भीतर उतर गया। पानी की त्राहि-त्राहि मची हुई है। गाँव-ढाणियाँ बदहाली पर छटपटा रही हैं।"[६]

८० के अकाल पर ऐसी ही रिपोर्टिंग मणि मधुकर ने अपने रिपोर्ताज संग्रह 'सूखे सरोवर के भूगोल' में किया है जिसमें उस दौर के अकाल का बडे ही मार्मिक एवं सूक्ष्म संवेदनात्मक स्तर पर चित्रण किया है जिसके लिए उपरोक्त सामाग्री आधार बिंदु है।

मणि मधुकर के राजस्थान अकाल संबंधी रिपोर्ताजों में सबसे बडी समस्या के रूप में 'पानी की कमी' को दर्शाया गया है। पानी की यह कमी फसल से ज्यादा पीने की समस्या से संबंधित है। "हलक की प्यास आदमी को कितना खूंखार, और क्रूर, बना देती है, पानी है तो रिश्ते हैं पानी नहीं तो रिश्ते भी नहीं हैं।.....भानसर, पोकरण, जैतारण, खांगल, जिधर जाओ पानी के लिए हाहाकार मचा हुआ है।"[७] पानी की इस समस्या को दूर करने के लिए औरतों को रोजाना इन क्षेत्रों में कडी धूप में ८-१० कि.मी. तक पैदल चलना पड़ता है जिसका असर उनके स्वास्थ्य के साथ-साथ उनकी कार्यक्षमता पर भी पडता है। हालांकि प्रशासन द्वारा टैंकरों के माध्यम से इन क्षेत्रों में पानी पहुंचाने की व्यवस्था है, किन्तु कमजोर क्रियान्वयन और बडे स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण यह प्रभावी नहीं हो पाता। लेखक ने इस पूरे तंत्र को उजागर किया है "कलाणा से ढाणी तक पानी की कुछ टंकियों को ट्रक द्वारा पहुँचाने का इंतजाम है...सुना है यह काम किसी ठेकेदार को दिया गया है, वह ठेके पर पानी लाता है और ६८ घरों की बस्ती में कुल २६ घडे भरकर रवाना हो जाता है....दूसरे दिन बाडमेर की तरफ से आते हुए रास्ते में ट्रक मिला। वह किनारे पर खडा था और ४-५ जने पानी की टंकियों को रेत में औंधा कर खाली कर रहे थे, वे ठेकेदार के आदमी थे। मैं चीखकर बोला तुम ऐसा क्यों कर रहे हो, क्या तुम्हें पता है....वे एक-एक बूंद के लिए मर रहे हैं और तुम इस तरह बेइमानी पर उतर आए। परंतु वहाँ मेरी कौन सुनता वे टंकियों का पानी तेजी से बहाकर लौट गए, हत्यारे! मेरे मुँह से निकला ....इससे पेट्रोल का खर्चा बचता है... एक अफसर को मैंने सारा हाल बताया और जोर देकर कहा कि आप चाहें तो वह जगह मैं आप को दिखा सकता हूं .....लेकिन उसने बडी मासूमियत से बखाना ये ठेकेदार ससुरे बदमाश होते हैं जी"[१०] इस तरह यह समझा जा सकता है कि सूखे प्रभावित इन इलाकों में उचित व्यवस्था और बेहतर क्रियान्वयन न होने से होने वाली मूलभूत वस्तुओं की कमी से अकाल की तीव्रता किस प्रकार बढ जाती है जिसे कुछ मुनाफों और भ्रष्टाचार जैसी मानसिकताओं का निवारण करके दूर किया जा सकता है अन्यथा ऐसे ही कुछ तत्वों से सामान्य प्रकृतिजन्य सूखा भीषण मानवजनित अकाल में तब्दील हो जाता है।

लेखक में उपरोक्त आक्रोश और पीडा की वजह वह दृश्य था जिसे वह कभी भूल नहीं सकता "स्त्री की गोद में डेढ वर्ष का बच्चा है, बच्चे की आँखे बन्द है, जाने कै रोज से उसने

पानी नहीं पिया है....इल्लू रे इल्लू माँ उसे जगाने की कोशिश करती है, बेहोश है स्त्री बच्चे को झकझोरती है, चूमती है, थपकती है ....क्या यह बच्चा इल्लू यूहीं मर जाएगा, वह पल भर अस्थिर कुछ सोचती है, फिर जोर से खखारकर अपनी हथेली पर थूकती है और इल्लू का हलक गीला करने लगती है, किसी भी शर्त पर वह इल्लू को जिंदा रखना चाहती है विकल्प सिर्फ़ यह है कि अपना गला खंगालकर उसका गला तर कर दे"[११] लेखक तब यह प्रश्न करता है कि "जिन्हें आप पीने का पानी नहीं दे सकते उनसे वोट माँगने का हक आपको किसने दिया"[१२] कुछ इसी प्रकार की रिपोर्टिंग 'रविवार' पत्रिका के संपादक शिरीष खरे ने अपनी रिपोर्ट 'थार के अकाल' में किया है उनके अनुसार "खतरनाक अकाल के हालात हैं ...कितना सूखा कितनी उपज, गरीबी, बेकारी, पलायन, कर्ज, योजनाएं, गुहार, नतीजतन अभी से हिसाब लगाया जा रहा है कितना फायदा, दावे, कायदे....और फायदे।"[१३]

अकाल् की दूसरी समस्या के तौर पर लेखक ने 'बरसात की कमी' को वर्णित किया है "एक बूढे से मैने पूछा यहाँ कब से बरसात नहीं हुई है....आठ साल से बूढे ने रूखाई से जवाब दिया। बाउ बरसात क्या होती है? पास खडे सात-आठ साल के बच्चे ने पूछा।...क्या पानी आकाश से भी गिरता है बच्चे ने सवाल किया। पैदा होने के बाद कभी बरसात नहीं देखी थी"[१४] हालांकि राजस्थान की यह स्थिति भौगोलिक और जलवायवीय दशा के कारण है जिसे सरकारी रिपोर्ट के माध्यम से भी व्यक्त किया गया है।

अकाल की अगली समस्या के रूप में रिपोर्ताजकार ने भुखमरी को केन्द्र में रखा है, "भयंकर गर्मी न कहीं पानी न कहीं धान। सिर्फ धूल और ताप....लगातार अकाल पडते हैं धरती कुछ नहीं देती....आदमी इतना कुंद हो जाता है कि वह अपने से अलग किसी का ख्याल नहीं कर पाता है"[१५] भुखमरी की तीव्रता को प्रकट करते हुए लेखक ने बडे ही मार्मिक दृश्यों का वर्णन किया है। प्रथम- "जिंदा रहने की इच्छा सब कुछ करवा लेती है, पिता किसी गड्ढे में बचा-खुचा धान छुपा देता है, रोज खुद एक दो फांकी मार लेता है पर अपने बच्चों को एक दाना तक नहीं दिखलाता, उन्हें अपनी मौत मरने देता है।"[१६] अकाल एक संवेदनारहित अवस्था है जहाँ भूख रिश्ते-नाते, सामाजिक संबंधो, आदर्शों, मूल्यों, मर्यादा, परंपरा आदि सब पर हावी होती है, क्योंकि अकाल का चरम प्राय: उत्पादन एवं विकल्पों का अभाव होता है। भुखमरी से पीडित व्यक्ति के समक्ष दो ही विकल्प होते हैं सबके ऊपर स्वयं के अस्तित्व को तरजीह दे या मृत्यु का वरण कर ले।

दूसरा- "बिरधू को दो सप्ताह पहले दो किलो बजरी मिली थी। उसके बाद गाडी नहीं आयी। पाँच प्राणियों के कुनबे में, उसने बजरी को भूनकर खिल्ली बन ली है जरूरत पडने पर भूख के प्रकार के आधार पर सबको मुठ्ठी भर खिल्ली देता है।....बिरधू ने भूख को तीन रूपों में बाँट रखा है, एक होती है झूठी भूख, फिर ठीक-ठीक भूख और अंत में सच्ची भूख।....सच्ची भूख लगे तो कुछ खा लेना चाहिए अन्य दोनों में नहीं। मनोरी बीमार है, उसकी पसलियाँ कटती जा रही हैं, उसने मनोरी से पूछा कैसी भूख लगी है बेबसी और पीडा में वह तय नहीं कर पाती है कि उसे कौन सी भूख लगी है। इसलिए बिरधू उसे सबसे कम खिल्ली देता है"[१७] यहाँ सबसे महत्वपूर्ण यह है कि अमर्त्य सेन जैसा अर्थशास्त्री भी भुखमरी को तीन स्तरों पर विभाजित करता है "१- सामान्य आहार में कमी २- आहार की मात्रा में निरंतर गिरावट ३- आहार में एकदम भारी गिरावट। अकाल की अवस्था में मुख्यत: तीसरा लक्षण पाया जाता है।"१८ किन्तु अकाल की तीव्रता के प्रबोधन में बिरधू का विभाजन ज्यादा व्यवहारिक और अनुभवजन्य है, क्योंकि सेन जी का तीसरा स्तर बिरधू के 'झूठी भूख तक ही पहुँच पाता है। भोगे गए यथार्थ की संवेदना आंकडो को आधार बनाकर निकाले गए निष्कर्ष से ज्यादा मानक होती है जिसे उपरोक्त उदाहरण के माध्यम से सम्यक तरिके से समझा जा सकता है।

अकाल की समस्या के तौर पर मणि मधुकर ने रिपोर्ताजों में खाद्य वितरण की अनियमितता, खाद्य पदार्थों का अवैध भंडारण, निम्न कोटि के खाद्य पदार्थों का वितरण जिससे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव फलत: मृत्यु आदि को बडे ही मार्मिक एवं प्रभावी तौर पर उल्लिखित किया है, उदाहरण के तौर पर पंच के घरों में अनाज की ढेरियों का लगा होना, लोगों को जानबूझ कर कम अनाज देना ताकि ब्लैक किया जा सके, खराब किस्म के अन्न का वितरण जिसे खाते ही उल्टी एवं दस्त के साथ-साथ छाती का जम जाना फलस्वरूप दम घुटने से मौत वहीं ऐसे अनाज खाने से बेहतर लोगों द्वारा धतूरे के बीज खाकर आत्महत्या करना। कुछ इसी प्रकार की समस्या को 'बिहार के अकाल' के संबंध मे रेणु ने 'हड्डियों के पुल'तथा 'भूमिदर्शन की भूमिका' नामक रिपोर्ताजों में उठाया है।

अकाल में कृषि के समानान्तर जीवन निर्वाह का प्रमुख साधन पशुपालन होता है जिससे न केवल आय उत्पादित की जा सकती है बल्कि स्वास्थ्य को भी सम्यक रखा जा सकता है किन्तु इसके लिये सबसे बडी आवश्यकता चारे कि उपलब्धता होती है राजस्थान में अकाल की आवृत्ति होते रहने के कारण राजस्थान सरकार अलग से चारे की व्यवस्था एवं उपलब्धता सस्ते दरों पर कराती है परन्तु इस क्षेत्र व्यापक भ्रष्टाचार होने के कारण पशुओं की बडी मात्रा में मृत्यु हो जाती है जिससे अकाल का स्तर और गहरा हो जाता है मणि मधुकर के शब्दों में "हम एक बाडे के सामने

खडे होकर बातें कर रहे थे। इधर-उधर भूसा के ढेर लगे हुए थे। तभी बाडे से दो गायें निकालकर बाहर फ़ेंक दी गयीं। वे मर रही थीं। ..... मवेशी बाडों में बन्द हैं। बाहर भूसे के अम्बार लगे हैं बाहर भी और भीतर मर रहे हैं उन्हें खिलाने पिलाने का जिम्मा लेने वाले आपाधापी में लगे हुए हैं" पृष्ठ स.-४६ कुछ ऎसी ही चिंता रेणु ने भी व्यक्त की है "बात यह है कि अब इलाके में न कहीं अन्न और न कहीं काम ..... गाय,बछडा,बकरी,बैल सब बिक गये। जिनके पास काम है वे सब मजदूरी देकर काम नहीं कराना चाहते" पृष्ठ संख्या- ४८

अकाल का सबसे बुरा प्रभाव स्त्रियों पर पडता है पुरुषों द्वारा उन्हें बच्चों सहित अकेले छोड़कर चले जाना, उनका शोषण होना, और स्वास्थ पर बुरा असर होना आदि। लेखक ने इन समस्याओं को प्रमुखता से चित्रित किय है कि राहत कार्य के लिए ग्रामीण स्तर पर नियुक्त अधिकारी उनका शोषण करते हैं वहीं कम पोषण के कारण उनका स्वास्थ गिरता जाता है जिसका असर भावी पीढी पर पडता है "बी.बी.सी हिन्दी" में 'रियाज सुहेल' द्वारा प्रस्तुत की गई रिपोर्ट "थार अकाल, भूख और अवसाद में जंग" में इस बात को प्रमुखता से कहा गया है कि "थार में भोजन की कमी के कारण महलाओं में खून की कमी आम है। नतीजतन बच्चे कमजोर पैदा होते हैं" [२२]

अकाल का सबसे बडा कुप्रभाव मृत्यू दर में लगातार वृद्धि का होना है मणि मधुकर ने इसे कुछ इस तरह प्रस्तुत किया है "जब छप्पना अकाल पडा तो पूरा गाँव मुर्दा ठठरियों से ढक गया। टीलों पर चमकते हुए हडिडयों के ढेर दूर से ही नजर आते थे.....बेपनाह मृत्यू का बेशर्म गवाह चार हर्फ़ों का यह नाम" 'घडियाल' इस प्रकार राजस्थान के अकाल को मणि मधुकर के रिपोताजों में समझा जा सकता है किंतु सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि राजस्थान के अकाल की आवृति देश के अन्य भागों में पडने वाले अकाल से भिन्न है इसका प्रमुख कारण इस रज्य की विशिष्ट भोगोलिक अवस्थिति एवं जलवायु दशा का होना है। इसके लिये किये गये उपाय एवं योजनायें भी भिन्न हैं इस रूप में अकाल, आवृति के रूप में राजस्थानी जीवन का हिस्सा बन चुका है जबकि अन्य स्थानों के लिये यह केवल आपदा एवं विभीषिका है शायद इसी कारण हिन्दी के अन्य रिपोर्ताज व इस छेत्र में लिखे गये रिपोर्ताजों में एक महत्व्पूर्ण अंतर नवजीवन तथा जिजीबिषा के स्तर पर देखा जा सकता है रेणु, रांगेय राघव आदि के रिपोर्ताजों में यह तत्व प्रवलता के साथ उपस्थित है जबकि मणि मधुकर के रिपोर्ताजों में इसका नितान्त महत्व है किन्तु फ़िर भी इसमें कहीं भी सन्देह नहीं है कि भूख से तडप तडप के मरते हुए मनुष्यों का दर्शन कराकर रेणु असली हिन्दुस्तान का साछ्त्कार कराते हैं तो वहीं मणि मधुकर राजस्थान का।

**सन्दर्भ परिचय**


1. पृ.सं.-३ - प्यासी धरती प्यासे लोग (रिपोर्ट) (राज्यसभा टेलिविजन) (८ जुलाई २०१६)
2. होम पेज - फ़्रिक्वेंसी ओफ़ डूट (आपदा प्रबंधन एवं सहायता विभाग, राजस्थान सरकार)
3. पृ.सं.-४७-४८- गरीबी और अकाल
4. पृ.सं.-२- द रैवेलियन
5. पृ.सं.-३- प्यासी धरती प्यासे लोग
6. पृ.सं.-१- राजस्थान में भीषण अकाल, किसान बर्बाद और बदहाल (रिपोर्ट,वर्ल्ड स्ट्रीट)
7. पृ.सं.-
8. पृ.सं.-६०- सूखे सरोवर का भूगोल
9. पृ.सं.-६१- वही
10. पृ.सं.-६३-६४- वही
11. पृ.सं.-६२-६३- वही
12. पृ.सं.-५९- वही
13. पृ.सं.-२ -थार का अकाल (रविवार, रिपोर्ट २५/०८/२००९)
14. पृ.सं.-३- वही
15. पृ.सं.-४३- सूखे सरोवर का भूगोल
16. पृ.सं.-१७- वही
17. पृ.सं.-१९-वही
18. पृ.सं.-४८- वही
19. पृ.सं.-४८ गरीबी और अकाल
20. पृ.सं.-४६- सूखे सरोवर का भूगोल
21. पृ.सं.-४८- समय की शिला पर
22. पृ.सं.-४- थार: अकाल भूख और अवसाद में जंग (रिपोर्ट, बी.बी.सी-हिंदी)